Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

व्यावसायिक एवं कौशल विकास: बदलते आर्थिक परिदृश्य में महत्व, चुनौतियां एवं संभावनाएं

डॉ. बबलू पासवान
सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, सब डिविज़नल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज नौहट्टा, रोहतास

Manuscript ID:
JRD -2025-171131
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 167-173
November. 2025
Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

वर्तमान समय के बदलते युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं रह गया है। बल्कि रोजगारोन्मुखी बनना भी अत्यंत आवश्यक हो गया है। आधुनिक समाज में वह शिक्षा अधिक मूल्यवान है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। यही कारण है कि शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक एवं कौशल विकास के विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों ने ऐसे व्यावहारिक ज्ञान, तकनीकी दक्षता एवं कार्यकुशलता का विकास करना है जिससे वे अपने जीवन यापन के लिए रोजगार प्राप्त कर सके या स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सके। कौशल विकास इस प्रकिया का अगला चरण है, जो व्यक्ति की क्षमताओं को निखारने, दक्षता बढ़ाने और नई तकनीकों के अनुरूप ढालने का कार्य करता है। व्यावसायिक एवं कौशल विकास किसी भी देश की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को सशक्त बनाने का एक महत्वपूर्ण आधार है। 21वीं शताब्दी में जब तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और औद्योगिक परिवर्तन तेजी से रोजगार की प्रकृति को बदल रहे हैं, तब केवल पारंपरिक शिक्षा पर्याप्त नहीं रह गई है। व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसे व्यावहारिक एवं तकनीकी ज्ञान से सुसज्जित करना है जिससे वे विभिन्न व्यवसायों, उद्योगों, सेवाओं, कृषि तथा आधुनिक क्षेत्रों जैसे सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा और नवीकरणीय ऊर्जा में दक्ष हो सकें। कौशल विकास न केवल रोजगारयोग्यता को बढ़ाता है, बल्कि युवाओं और महिलाओं में आत्मनिर्भरता और उद्यमशीलता की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। यह सैद्धांतिक ज्ञान और व्यवहारिक अनुप्रयोग के बीच सेतु का कार्य करता है, जिससे व्यक्ति बदलती औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाल सके। भारत जैसे विकासशील देश के लिए व्यावसायिक शिक्षा बेरोजगारी को कम करने और समावेशी आर्थिक विकास सुनिश्चित करने का एक प्रभावी माध्यम है। भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई योजनाएँ जैसे राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) तथा स्किल इंडिया मिशन इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दे रही हैं। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC) एवं औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITIs) उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं प्रमाणन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। फिर भी, इस क्षेत्र के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं — जैसे कौशल प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता की कमी, पाठ्यक्रम का पुरातन स्वरूप, अधोसंरचना की कमी और प्रशिक्षण व रोजगार के बीच असंतुलन। इन समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक है कि व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ा जाए, उद्योग-अकादमिक सहयोग को मजबूत किया जाए, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए और लैंगिक समानता सुनिश्चित की जाए। अंततः, व्यावसायिक एवं कौशल विकास आर्थिक परिवर्तन और सामाजिक सशक्तिकरण का उत्प्रेरक है। यदि कार्यबल को उपयुक्त कौशल और दक्षताओं से लैस किया जाए, तो देश उच्च उत्पादकता, नवाचार तथा सतत विकास के लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

मुख्य कुंजिका: *व्यावसायिक, कौशल विकास, नवाचार, डिजिटल साक्षरता, सतत विकास*

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. बबलू पासवान, सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, सब डिविज़नल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज नौहट्टा, रोहतास

How to cite this article:
पासवान, . बबलू . (2025). व्यावसायिक एवं कौशल विकास: बदलते आर्थिक परिदृश्य में महत्व, चुनौतियां एवं संभावनाएं. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 167–173.
https://doi.org/10.5281/zenodo.17935332

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17935332
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

प्रास्तावना

विश्व अर्थव्यवस्था 21वीं सदी में जिस गति से परिवर्तनशील हुई है, वह मानव इतिहास में अभूतपूर्व है। औद्योगिक क्रांति से लेकर आज की डिजिटल क्रांति तक, प्रत्येक चरण ने मानव जीवन, उत्पादन प्रणालियों और रोजगार की प्रकृति को पूरी तरह बदल दिया है।विशेषकर 2000 के बाद तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, स्वचालन, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के तीव्र विस्तार ने पारंपरिक रोजगार संरचना को नए रूप में ढाल दिया है। इस परिवर्तनशील आर्थिक और तकनीकी वातावरण में केवल पारंपरिक शिक्षा या डिग्री किसी भी व्यक्ति को रोजगार सुनिश्चित नहीं कर सकती। इसीलिए व्यावसायिक एवं कौशल विकास आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। आज का रोजगार बाजार क्वालिफिकेशन से अधिक क्वालिटी स्किल्स को महत्व देता है। उद्योगों, सेवाओं, कृषि, विनिर्माण, परिवहन, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे सभी क्षेत्रों में कार्यकुशल, प्रशिक्षित और तकनीकी दक्ष मानव संसाधन की माँग निरंतर बढ़ रही है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के लिए यह चुनौती और अवसर—दोनों को एक साथ प्रस्तुत करता है। भारत वर्तमान में विश्व का सबसे युवा देश है, जहाँ 65% से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह जनसांख्यिकीय लाभांश तभी सार्थक हो सकता है जब युवा वर्ग को व्यावहारिक ज्ञान, कार्यकुशलता, तकनीकी क्षमता और उद्यमिता से युक्त किया जाए। यदि कौशल विकास को प्राथमिकता नहीं दी गई, तो यही विशाल युवा शक्ति बेरोजगारी और सामाजिक असंतोष का कारण बन सकती है। व्यावसायिक व कौशल विकास की महत्ता इसलिए भी बढ़ गई है क्योंकि रोजगार का स्वरूप बदल चुका है। पहले नौकरी का अर्थ था—एक कंपनी में लंबे समय तक कार्य करना। आज परिस्थितियाँ बहु-आयामी हो चुकी हैं।

- फ्रीलांसिंग (Freelancing)
- गिग इकॉनॉमी (Gig Economy)
- रिमोट वर्क (Remote Work)
- स्टार्टअप कल्चर
- इनोवेशन आधारित रोजगार
- ई-कॉमर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित स्वरोजगार।

इन सभी ने रोजगार को लचीला, कौशल-आधारित और प्रतिस्पर्धी बनाया है। ऐसे माहौल में पारंपरिक शिक्षा की सीमाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए, इंजीनियरिंग, विज्ञान या वाणिज्य की डिग्री होने मात्र से रोजगार सुनिश्चित नहीं हो जाता, जब तक कि व्यक्ति डिजिटल कौशल, संचार कौशल, समस्या-समाधान, डेटा-विश्लेषण, प्रोग्रामिंग, मशीन लर्निंग, या ग्राहक प्रबंधन जैसे कौशल न रखता हो।

इसके अतिरिक्त, तेजी से बढ़ते औद्योगिक क्षेत्रों — जैसे ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, हेल्थकेयर, पर्यटन, खाद्य-प्रसंस्करण, टेक्सटाइल, कंस्ट्रक्शन — में प्रतिस्पर्धा और उत्पादन की गुणवत्ता तभी संभव है जब कर्मचारियों के पास अद्यतन और उच्च स्तरीय कौशल हो। भारत में बड़ी संख्या में युवा स्नातक होने के बावजूद, उद्योगों में "कौशल-अभाव" (Skill Gap) व्याप्त है। कई सर्वे रिपोर्टों के अनुसार भारत में 70–80% युवा जॉब मार्केट में आवश्यक कौशल मानकों को पूरा नहीं करते। इससे रोजगार और कौशल के बीच असंतुलन पैदा होता है।

व्यावसायिक एवं कौशल विकास की अवधारणा:

भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच कौशल अवसरों में भी असमानता मौजूद है। ग्रामीण युवाओं को सही प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और तकनीकी संसाधन नहीं मिल पाते, जबकि शहरों में प्रशिक्षण संस्थानों की भरमार है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक मानसिकता भी बाधक है। भारत में व्यावसायिक शिक्षा को अभी भी सामान्य डिग्री की तुलना में कमतर माना जाता है, जिसके कारण युवा इस दिशा में जाने से हिचकिचाते हैं। भारतीय सरकार ने इस समस्या को समझते हुए पिछले एक दशक में कौशल विकास को जन-आंदोलन का रूप देने का प्रयास किया है। "स्किल इंडिया मिशन", "प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)", "राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC)", "ग्रामीण कौशल विकास योजना", "ITI संस्थानों का आधुनिकीकरण" आदि ने लाखों युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया है। उद्योगों की सहभागिता, PPP मॉडल, अप्रेंटिसशिप कार्यक्रम, डिजिटल स्किल्स प्रशिक्षण जैसी पहलें भारत को कौशल-समृद्ध देश बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। लेकिन इन सबके बावजूद चुनौतियाँ विद्यमान हैं — प्रशिक्षण की गुणवत्ता, इंडस्ट्री की बदलती जरूरतें, प्रशिक्षकों का अभाव, संसाधनों की कमी, और कौशल के अनुरूप रोजगार उपलब्ध न होना। इन सभी परिस्थितियों में व्यावसायिक व

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

कौशल विकास केवल रोजगार उपलब्ध कराने का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का माध्यम बन चुका है। कौशल विकास सशक्तिकरण का आधार है—

- यह युवाओं को आत्मनिर्भर बनाता है।
- उद्यमिता को बढ़ावा देता है।
- गरीबी हटाने में सहायक है।
- ग्रामीण विकास में योगदान देता है।
- उद्योगों की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाता है।

कौशल के प्रकार

कौशल विकास मानव संसाधन को सक्षम, उत्पादक और प्रतिस्पर्धी बनाने की वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने ज्ञान, दक्षता, दृष्टिकोण और कार्यकुशलता को विकसित करता है। आधुनिक रोजगार बाजार में कौशल का महत्व केवल तकनीकी कार्यक्षमता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें बौद्धिक, सामाजिक, संचारात्मक, डिजिटल, प्रबंधकीय एवं उद्यमिता जैसे विविध क्षेत्र सम्मिलित हैं। नीचे कौशल के प्रकारों का बहु-आयामी, विस्तृततम, और गहन विश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत है:

1. **तकनीकी कौशल**

ये कौशल किसी विशिष्ट कार्य, मशीन, उपकरण, प्रणाली या प्रक्रिया को संचालित करने के लिए आवश्यक होते हैं। आधुनिक उद्योग क्षेत्रों में तकनीकी कौशल का सबसे अधिक महत्व है।

1. औद्योगिक तकनीकी कौशल

- मशीन चलाना
- CNC मशीनिंग
- वेल्डिंग, फेब्रिकेशन
- HVAC प्रणाली प्रबंधन
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत
- मोटर मैकेनिक, ऑटोमोबाइल सर्विसिंग
- सोलर पैनल इंस्टॉलेशन

2. इंजीनियरिंग तकनीकी कौशल

- CAD/CAM
- इलेक्ट्रिकल सर्किट डिजाइन
- मैकेनिकल ड्राइंग
- 3D मॉडलिंग
- रोबोटिक्स ऑपरेशन

3. स्वास्थ्य एवं मेडिकल तकनीकी कौशल

- पेशेवर नर्सिंग कौशल
- पैथोलॉजी, लैब तकनीशियन
- फार्मेसी तकनीक
- मेडिकल उपकरण संचालन

4. कृषि एवं कृषि-प्रौद्योगिकी कौशल

- ड्रिप सिंचाई संचालन
- आधुनिक कृषि मशीनरी का उपयोग
- मिट्टी परीक्षण
- फसल प्रबंधन
- कृषि ड्रोन ऑपरेशन

डिजिटल कौशल

डिजिटल अर्थव्यवस्था में डिजिटल कौशल का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। नई तकनीक, इंटरनेट, डेटा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित नौकरियों में इन कौशलों की आवश्यकता अनिवार्य है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

1. बेसिक डिजिटल कौशल

- कंप्यूटर संचालन
- इंटरनेट उपयोग
- ई-मेल, ऑनलाइन संचार
- डिजिटल वित्तीय लेन-देन

2 एडवांस डिजिटल कौशल

- प्रोग्रामिंग (Python, Java, C++, etc.)
- मशीन लर्निंग
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
- डेटा साइंस और बिग डेटा
- साइबर सुरक्षा
- क्लाउड कंप्यूटिंग
- वेबसाइट डिज़ाइनिंग
- मोबाइल ऐप डेवलपमेंट
- डिजिटल मार्केटिंग

3. डिजिटल क्रिएटिव स्किल्स

- ग्राफिक डिजाइन
- वीडियो एडिटिंग
- एनीमेशन
- UI/UX डिज़ाइन

व्यावसायिक कौशल

व्यावसायिक कौशल वे कौशल हैं जो किसी विशेष पेशे के लिए आवश्यक होते हैं और जिनका प्रशिक्षण अधिकतर तकनीकी व व्यावहारिक होता है।

- निर्माण क्षेत्र कौशल
- मिस्त्री
- बढ़ई
- प्लंबर
- पेंटर
- इलेक्ट्रिशियन

सेवा क्षेत्र कौशल

- होटल प्रबंधन
- फूड एंड बेवरेज सर्विस
- पर्यटन एवं आतिथ्य
- ग्राहक सेवा

हस्तशिल्प एवं परंपरागत कौशल

- बुनाई
- शिल्पकारी
- जरी कार्य
- मधुबनी/वारली/गोंड पेंटिंग
- हथकरघा

भारत में व्यावसायिक कौशलों का विशाल बाजार मौजूद है। तकनीकी कौशल किसी भी विकासशील अर्थव्यवस्था में उत्पादन क्षमता बढ़ाने और उद्योगों को प्रतिस्पर्धी बनाने का आधार हैं। कौशल के प्रकार केवल कुछ श्रेणियों तक सीमित नहीं हैं; बल्कि यह एक व्यापक बहु-स्तरीय प्रणाली है, जिसमें तकनीकी, सामाजिक, डिजिटल, प्रबंधकीय, उद्यमिता, व्यावसायिक, जीवन कौशल और भविष्य-उन्मुख कौशल सम्मिलित हैं। आधुनिक रोजगार बाजार में इन सभी कौशलों की आवश्यकता होती है, और भारत के युवाओं को इन विविध कौशलों से सुसज्जित करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

व्यावसायिक एवं कौशल विकास का महत्व :

व्यावसायिक एवं कौशल विकास किसी भी समाज, अर्थव्यवस्था और राष्ट्र की उन्नति का केंद्रीय आधार है। 21वीं सदी के इस प्रतिस्पर्धात्मक वैश्विक परिदृश्य में कौशल वह शक्ति है जो व्यक्तियों को न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करती है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, नवाचारी और सामाजिक रूप से सशक्त बनाती है। कौशल विकास का महत्व केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक, तकनीकी, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विकास से भी जुड़ा हुआ है। नीचे इस विषय का बहु-आयामी और शोधपरक विश्लेषण प्रस्तुत है। किसी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व कौशलयुक्त मानव संसाधन होता है।

- कौशलयुक्त श्रमिक उत्पादन की दक्षता को बढ़ाते हैं।
- उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता मजबूत होती है।
- संसाधनों का उपयोग अधिक कुशलता से होता है।
- GDP एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

दुनिया के विकसित राष्ट्र—जैसे जर्मनी, जापान, दक्षिण कोरिया—अपनी प्रगति का बड़ा कारण उच्च कौशल स्तर को मानते हैं। भारत की युवा आबादी विशाल है, जिसे यदि कुशल बनाया जाए तो आर्थिक विकास की गति कई गुना बढ़ सकती है।

बेरोजगारी की समस्या में कमी

भारत में बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है। इसका मुख्य कारण "कौशल-अभाव" (Skill Gap) है।

- अनेक युवा डिग्री तो रखते हैं, पर कौशल की कमी के कारण नौकरी नहीं मिलती।
- कौशल प्रशिक्षण युवाओं को रोजगार योग्य (Employable) बनाता है।
- उद्योग-आधारित प्रशिक्षण से सीधे नौकरी के अवसर बढ़ते हैं।
- स्वरोजगार की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं।
- कौशल विकास से शिक्षित बेरोजगारी में उल्लेखनीय कमी आती है।

उद्योगों की मांग की पूर्ति

आज के समय में उद्योगों को वही श्रमिक चाहिए जिनके पास उपयुक्त और अद्यतन कौशल हों।

- टेक्सटाइल, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, निर्माण, आईटी, कृषि-प्रसंस्करण आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षित मानव संसाधन की भारी मांग है।
- यदि कौशल विकास व्यवस्थित तरीके से हो, तो उद्योगों को आवश्यक मनुष्य शक्ति आसानी से उपलब्ध होती है।
- इससे उद्योगों का विस्तार, उत्पादन में सुधार और निर्यात क्षमता में वृद्धि होती है।

उद्यमिता को बढ़ावा

कौशल विकास का मुख्य उद्देश्य केवल नौकरी देना नहीं, बल्कि व्यक्ति को स्वयं रोजगार सृजित करने के योग्य बनाना भी है।

- प्रशिक्षित व्यक्ति नए व्यवसाय, स्टार्टअप, सर्विस सेंटर, तकनीकी सेवाओं और ऑनलाइन व्यापार को सफलतापूर्वक संचालित कर सकता है।
- उद्यमिता युवाओं को नौकरी खोजने वाले से नौकरी देने वाला बनाती है।
- इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन बढ़ता है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
- भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम इसी कौशल-आधारित उद्यमिता से मजबूत हो रहा है।

सामाजिक सशक्तिकरण

- कौशल विकास समाज के वंचित, कमजोर, महिला एवं पिछड़े वर्गों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है।
- महिलाएँ सिलाई, ब्यूटी, डिजिटल मार्केटिंग, फूड-प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों में कौशल प्राप्त कर आत्मनिर्भर हो रही हैं।
- ग्रामीण युवा स्वरोजगार अपनाकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधार रहे हैं।
- SC/ST/OBC वर्गों के लिए विशेष कौशल योजनाओं से समान अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।
- कौशल विकास सामाजिक समानता और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

वैश्वीकरण के युग में प्रतिस्पर्धात्मकता

वैश्वीकरण ने रोजगार बाजार को अंतरराष्ट्रीय बना दिया है। प्रतिस्पर्धा वैश्विक स्तर तक पहुँच चुकी है।

- कौशलयुक्त व्यक्ति वैश्विक बाजार में अधिक मांग में होते हैं।
- विदेशों में रोजगार अवसर बढ़ जाते हैं।
- अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण से युवाओं को उच्च वेतन वाली नौकरियाँ प्राप्त होती हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

- कौशल विकास वैश्विक प्रतिस्पर्धा में किसी राष्ट्र की स्थिति मजबूत करता है।

तकनीकी परिवर्तन के युग में अनिवार्यता

AI, रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग, क्लाउड कम्प्यूटिंग, डेटा साइंस जैसी तकनीकें विश्व को बदल रही हैं।

- तकनीकी बदलाव के अनुरूप कौशल न होने पर व्यक्ति रोजगार से बाहर हो सकता है।
- डिजिटल कौशल और तकनीकी दक्षता नए रोजगारों की कुंजी हैं।
- कौशल विकास व्यक्ति को इन आधुनिक तकनीकों के लिए तैयार करता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई संभावनाएँ

ग्रामीण भारत में कौशल विकास का महत्व और भी अधिक है।

- कृषि आधारित उद्योग
- दूध एवं डेयरी
- हस्तशिल्प और हथकरघा
- ग्रामीण-पर्यटन

राष्ट्रीय विकास में योगदान

- कौशल विकास केवल व्यक्ति का नहीं बल्कि राष्ट्र का निर्माण करता है।
- कुशल मानव संसाधन राष्ट्र की रणनीतिक शक्ति बढ़ाता है।
- रक्षा, स्वास्थ्य, अनुसंधान, शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीक सभी क्षेत्रों में कौशल महत्वपूर्ण है।
- कौशलयुक्त जनशक्ति विदेशी निवेश (FDI) को आकर्षित करती है।
- कौशल-समृद्ध राष्ट्र वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति मजबूत करता है।

गरीबी उन्मूलन में सहयोग :

- कौशल विकास गरीबी उन्मूलन का सबसे प्रभावी साधन है।
- प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति बेहतर आय स्रोत विकसित कर सकता है।
- परिवार की आय में वृद्धि से जीवन-स्तर सुधरता है।
- कौशलयुक्त व्यक्ति अपनी संतानों को बेहतर शिक्षा दे सकता है।
- लंबी अवधि में कौशल विकास गरीबी के चक्र को तोड़ता है।

व्यक्तित्व विकास और आत्मविश्वास में वृद्धि

- आत्मनिर्भरता
- आत्मविश्वास
- पेशेवर दक्षता
- निर्णय क्षमता
- नवाचार क्षमता

सतत विकास

ग्रीन स्किल्स (Green Skills) और पर्यावरणीय कौशल आज की जरूरत हैं।

- नवीकरणीय ऊर्जा
- कचरा प्रबंधन
- जल संरक्षण
- जैविक खेती

इन क्षेत्रों में कौशल सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में महत्वपूर्ण है।

कार्यस्थल पर उत्पादकता में वृद्धि

कुशल कर्मचारी कम समय में अधिक और बेहतर गुणवत्ता का कार्य करते हैं।

- कार्यकुशलता बढ़ती है।
- त्रुटियाँ कम होती हैं।
- उद्योगों में उत्पादन लागत कम होती है।
- प्रतिस्पर्धा और ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है।

मानव पूँजी निर्माण

शिक्षा + कौशल = मजबूत मानव पूँजी

मानव पूँजी किसी भी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान संपत्ति होती है। कौशल विकास उस पूँजी को उन्नत बनाता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

निष्कर्ष

व्यावसायिक एवं कौशल विकास आज के युग की सबसे मूलभूत और निर्णायक आवश्यकताओं में से एक है। तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी उन्नति, ज्ञानाधारित अर्थव्यवस्था और प्रतिस्पर्धी बाज़ार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल पारंपरिक शिक्षा या डिग्री किसी व्यक्ति की सफलता की गारंटी नहीं दे सकती। आज असली सफलता उन लोगों की है, जो विशिष्ट कौशल रखते हैं, नवीन परिस्थितियों को अपनाने में सक्षम हैं, और सतत सीखने की मानसिकता रखते हैं। कौशल विकास न केवल व्यक्ति की रोजगार-योग्यता (Employability) को बढ़ाता है, बल्कि उसे आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सशक्त भी बनाता है। यह युवा वर्ग के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलता है और ग्रामीण क्षेत्रों—जहाँ रोजगार के अवसर सीमित होते हैं—में भी स्व-रोज़गार, उद्यमिता और बेहतर आय के मार्ग तैयार करता है। आज के समय में कौशल विकास केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी उपकरण बन चुका है। सरकार द्वारा संचालित योजनाएँ—जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY), डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया मिशन, जनधन–आधार–मोबाइल (JAM) पहल, आईटीआई संस्थान, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI)—देश में कौशल निर्माण के माध्यम से आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देने का कार्य कर रही हैं। निजी क्षेत्र, उद्योग, स्टार्ट-अप और गैर-सरकारी संस्थाएँ भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। कौशल विकास का महत्व केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं है; इसके दूरगामी सामाजिक प्रभाव भी हैं। कौशल युक्त व्यक्ति गरीबी उन्मूलन में सहायता करता है, अपनी जीवन शैली को बेहतर बनाता है, सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। विशेषकर महिलाएँ, दिव्यांगजन, ग्रामीण युवा तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग कौशल विकास के माध्यम से मुख्यधारा में आने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। अंततः, व्यावसायिक एवं कौशल विकास आधुनिक युग की एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह न केवल व्यक्ति को आय के साधन उपलब्ध कराता है, बल्कि उसे आत्मसम्मान, गरिमा और बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा देता है। जानकारी-प्रधान अर्थव्यवस्था में कौशल ही वह माध्यम है जो व्यक्ति को प्रतिस्पर्धा में बनाए रखता है और उसे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यावसायिक एवं कौशल विकास का विस्तार, प्रसार और गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन किसी भी राष्ट्र—विशेषकर भारत जैसे विकासशील देश—की प्रगति, सामाजिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि की आधारशिला है। कौशल सम्पन्न जनसंख्या ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती है।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. के. (2018). भारत में कौशल विकास और रोजगार के अवसर. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
2. अग्रवाल, एस. (2020). व्यावसायिक शिक्षा का महत्व और भारतीय परिप्रेक्ष्य. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड एंड आइ.बी.एच. पब्लिशर्स।
3. भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (2015). प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना: दिशा-निर्देश एवं रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
4. सिंह, मोनिका एवं यादव, राकेश. (2019). कौशल विकास एवं उद्यमिता: एक अध्ययन. लखनऊ: भारतीय शैक्षणिक प्रकाशन।
5. राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC). (2021). भारत में कौशल परिदृश्य रिपोर्ट. नई दिल्ली: एन.एस.डी.सी. सचिवालय।
6. गुप्ता, एस. एवं मिश्रा, डी. (2017). तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार. जयपुर: राजस्थान प्रकाशन।
7. UNDP India. (2020). Skill Development for Inclusive Growth in India. नई दिल्ली: संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम।
8. विश्व बैंक. (2019). भारत में रोजगार और कौशल विकास पर रिपोर्ट. नई दिल्ली: विश्व बैंक प्रकाशन।
9. कुमार, दिनेश. (2021). डिजिटल युग में कौशल विकास की आवश्यकता. पटना: ज्ञानगंगा प्रकाशन।
10. ILO (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन). (2018). Skills for Employment in India Report. जिनेवा: ILO प्रकाशन।